महत्तर सम्मान से नवाजे गए प्रो. विश्वनाथ तिवारी, डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णनन को भी मिल चुका है यह सम्मान Gorakhpur News

Publish Date:Mon, 30 Sep 2019 09:51 AM (IST)

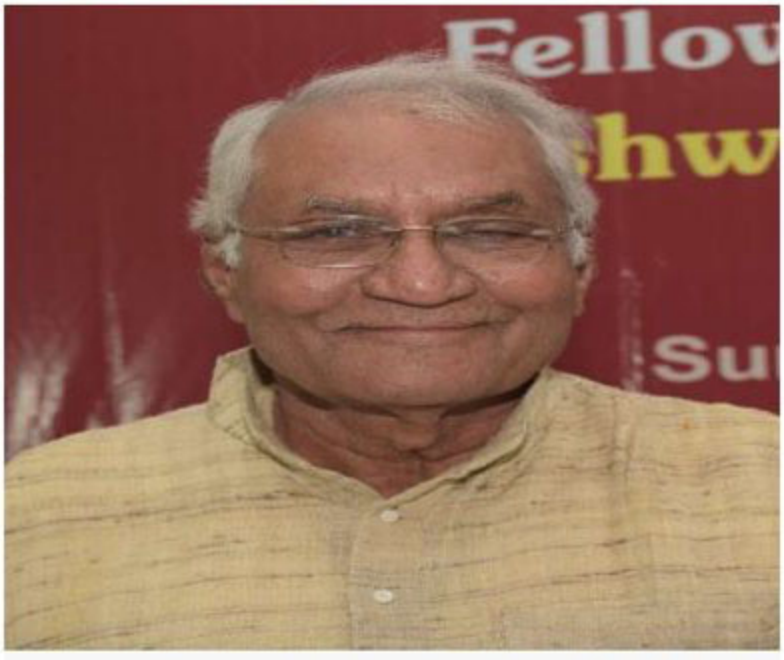

साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष व दस्तावेज के संपादक प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी को अकादमी के सर्वोच्च महत्तर सदस्यता सम्मान से सम्मानित किया गया।

लेटेस्ट वीडियो

News Bulletin - महाराष्ट्र में होगा शिवसेना का CM: संजय राउत और अन्य बड़ी ख़बरें

Bigg Boss 13 Day 10: Queen बनने के लिए Rashmi-Koena में टक्कर

Bigg Boss 13 Day 10: Arti लेंगी Koena से पंगा, होगी जमकर तकरार

विधानसभा चुनाव 2019

1952 से 2019 तक इन राज्यों के विधानसभा चुनाव की हर जानकारी के लिए क्लिक करें।

पूछें अपने सवाल | चुनाव 360

हरियाणा दिल्ली झारखंड महाराष्ट्र

चुनाव क्षेत्र

गोरखपुर, जेएनएन। साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष व दस्तावेज के संपादक प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी को अकादमी के सर्वोच्च महत्तर सदस्यता सम्मान से सम्मानित किया गया। यह सम्मान दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के संवाद भवन में आयोजित समारोह में अकादमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार, उपाध्यक्ष माधव कौशिक व सचिव के.श्रीनिवासराव ने परामर्श मंडल के सदस्यों की उपस्थिति में प्रदान किया।

समाज को नई दिशा देती हैं प्रो. तिवारी की कविताएं

महत्तर सदस्यता अर्पण एवं संवाद कार्यक्रम को संबोधित करते हुए साहित्य अकादमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि कविताएं व विचार मनुष्य की भावनाओं व अहसासों को खूबसूरत बनाते हैं। प्रो. तिवारी की कविताएं समाज को नई दिशा देती हैं। यह अतिशयोक्ति नहीं कि वह अपने आप में एक संस्थान हैं। इनके साथ अकादमी में बिताए पल जीवन के लिए अनमोल हैं। इन्होंने कठिन परिस्थितियों में शालीनता एवं दृढ़ता से कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए। इनसे मुझे काफी कुछ सीखने को मिला।

बेड़ियां हमेशा आदमी को छोटा करती हैं : प्रो.चितरंजन मिश्र

(गोरखपुर कार्यालय)

गोरखपुर। साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष आचार्य विश्वनाथ प्रसाद तिवारी जी को साहित्य अकादमी नई दिल्ली द्वारा ष्महत्तर सदस्यताष् सम्मान से सम्मानित किया गया। यह कार्यक्रम गोरखपुर विश्वविद्यालय के संवाद भवन में संपन्न हुआ। जिसमें साहित्य अकादमी के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, संयोजक एवं कई साहित्यकारों ने शामिल होकर अपने आचार्य विश्वनाथ प्रसाद तिवारी जी को सम्मानित किया। यह गोरखपुर विश्वविद्यालय और गोरखपुर वासियों के लिए बहुत बड़े गौरव की बात है।इस कार्यक्रम में आचार्य तिवारी जी के समग्र व्यक्तित्व पर कई साहित्यकारों ने बहुत व्यापक प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम के दूसरे सत्र में प्रो अरुण कमल जी, डॉ कमलकिशोर गोयनका और प्रो रेवती रमण जी ने प्रो तिवारी जी के समग्र व्यक्तित्व के बारे में बहुत सजीव दृष्टि से प्रकाश डाला।

समापन में हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. चितरंजन मिश्र जी ने प्रो तिवारी जी के साहित्य के योगदान व उनके विचार दृष्टि पर बहुत व्यापक स्तर से चर्चा किया, उन्होंने बताया कि प्रो.तिवारी जी कविताएं वेडियों को तोडती हैं।अध्यक्षता करते हुए प्रोफेसर चित्तरंजन मिश्र ने कहा कि बेड़ियां हमेशा आदमी को छोटा करती हैं।प्रोफेसर तिवारी जी हमेशा दूसरों की स्वाधीनता की भी रक्षा करते हैं।उन्होने यह भी बताया कि वह बड़ा नहीं होता जो बराबर दूसरों को छोटा बनाता है बल्कि बड़ा वह होता है जिसके पास कोई छोटा भी बैठकर बड़ा महसूस करता है। इस तरह से प्रोफेसर विश्वनाथ प्रसाद तिवारी जी का जीवन और उनका साहित्य हम सभी के लिए प्रेरणा स्रोत है। इस कार्यक्रम में आचार्य तिवारी जी के दो काव्य संग्रह का लोकार्पण भी किया गया।

प्रो. विश्वनाथ तिवारी को साहित्य जगत का 'महत्तर सम्मान'

साहित्य अकादमी की ओर से संवाद भवन में किया गया सम्मानित

अमर उजाला ब्यूरो

गोरखपुर। साहित्य अकादमी की ओर से गोरखपुर के प्रख्यात हिंदी कवि एवं समालोचक प्रो. विश्वनाथ तिवारी को महत्तर सम्मान से सम्मानित किया गया। अकादमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार, सचिव के श्रीनिवास राव की मौजूदगी में उन्हें सम्मान से गोरखपुर विश्वविद्यालय के संवाद भवन में नवाजा गया। अकादमी की ओर से दिए जाने वाले सर्वोच्च सम्मान से गदगद प्रो. तिवारी ने इसे जिंदगी के कभी न भूलने वाले क्षणों में से एक बताया। अकादमी ने अपना पहला महत्तर सम्मान पूर्व राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन को दिया था। साहित्यकार प्रो. नामवर सिंह को भी यह सम्मान मिल चुका है। उस समय साहित्य अकादमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ तिवारी ही थे।

संवाद भवन में आयोजित कार्यक्रम में साहित्य अकादमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार, सचिव के श्रीनिवासन, उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने प्रो. विश्वनाथ तिवारी को 'महत्तर सदस्यता अर्पण' सम्मान से नवाजा। अमर उजाला

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में साहित्यप्रेमी व शिक्षक मौजूद रहे। अमर उजाला

प्रो. तिवारी की दो पुस्तकों का किया गया विमोचन

समारोह में प्रो विश्वनाथ तिवारी नये कविता संग्रह सबने कुछ दिया और केरल के लेखक ए. अरविंदाक्षन की प्रो विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की सृजनात्मकता का विस्तार विस्तार दोनों किताबों का विमोचन किया गया।

योगदान पर अकादमी की ओर से बनेगी डाक्यूमेंट्री

प्रो. विश्वनाथ तिवारी के योगदान को देखते हुए साहित्य अकादमी की ओर से एक डाक्यूमेंट्री का निर्माण कराया जाएगा। दिल्ली दूरदर्शन की टीम जल्द ही गोरखपुर आकर इस डाक्यूमेंट्री पर काम करना शुरू करेगी।

डीडीयू के संवाद भवन में हुए सम्मान अर्पण समारोह में साहित्य अकादमी के सर्वोच्च सम्मान से नवाजे गए प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

गर्व : महत्तर सम्मान का गवाह बना गोरखपुर

गोरखपुर | वरिष्ठ संवाददाता

रविवार की शाम गोरखपुर एक ऐसे सम्मान का गवाह बना, जो साहित्य अकादमी का सर्वोच्च सम्मान है। जिस सम्मान से डॉ. राधाकृष्णन व चक्रवर्ती राजगोपालाचारी जैसी विभूतियां सम्मानित हो चुकी हैं, साहित्य अकादमी के उसी महत्तर सम्मान से प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी नवाजे गए। इसी के साथ गोरखपुर भी अकादमी के सर्वोच्च सम्मान से अलंकृत हुआ। इसके लिए साहित्य अकादमी नई दिल्ली की पूरी टीम डीडीयू के संवाद भवन में उपस्थित थी। अकादमी के अध्यक्ष, सचिव व उपाध्यक्ष ने कहा कि प्रो. तिवारी को सम्मानित कर अकादमी खुद को सौभाग्यशाली मान रही है।

रविवार शाम करीब छह बजे जब संवाद भवन में संचालक ने प्रो. तिवारी को सम्मान देने के लिए अकादमी अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार, सचिव के. श्रीनिवासराव और उपाध्यक्ष माधव कौशिक को मंच से आवाज दी तो खचाखच भरा हाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। अकादमी के पदाधिकारियों ने पहले प्रो. तिवारी का माल्यार्पण कर स्वागत किया और उसके बाद महत्तर सम्मान से नवाजा। अकादमी ने अपना पहला महत्तर सम्मान पूर्व राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन को दिया था। प्रो. तिवारी से ठीक पहले प्रख्यात समालोचक स्व. प्रो. नामवर सिंह को यह सम्मान सौंपा गया था। तब साहित्य अकादमी के अध्यक्ष प्रो. तिवारी ही थे। उन्हीं की अध्यक्षता में प्रो. सिंह को यह सम्मान उनके घर जाकर दिया गया था। अकादमी का महत्तर सम्मान देने के लिए अकादमी की परंपरा है कि वह इसे देने के लिए चुने गए साहित्यकार के शहर खुद पहुंचती है।

प्रो. तिवारी वर्ष-2008 में साहित्य अकादमी में हिन्दी परामर्श मंडल के संयोजक बने। इसके बाद उपाध्यक्ष और फिर अध्यक्ष बने। वर्ष- 2017 में उन्होंने अकादमी के अध्यक्ष के रूप में अपना सफल कार्यकाल पूरा किया। साहित्य अकादमी में वह हिन्दी साहित्य से जुड़े पहले अध्यक्ष के रूप में भी याद किए जाएंगे। गोरखपुर के साहित्यप्रेमी, साहित्य अकादमी की पूरी टीम और शहर के गणमान्य नागरिकों के साथ प्रो. तिवारी की धर्मपत्नी पुष्पावती देवी तथा पूरा परिवार इस सर्वोच्च सम्मान के गवाह बने।

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के संवाद भवन में रविवार को साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में पुस्तक का विमोचन करते प्रो. विश्वनाथ तिवारी, चन्द्रशेखर कंबार, माधव कौशिक, के श्रीनिवासराव व अन्य।

प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की दो पुस्तकों का हुआ विमोचन

सम्मान अर्पण समारोह में प्रो. विश्वनाथ तिवारी की रचनाओं पर आधारित 'आलोचनात्मक सृजनात्मकता का विस्तार' और उनके नये कविता संग्रह 'सबने कुछ दिया' का विमोचन भी किया गया। 'आलोचनात्मक सृजनात्मकता का विस्तार' प्रो. तिवारी की रचनाओं पर आधारित पुस्तक है। इस पुस्तक का संपादन दक्षिण भारतीय साहित्यकार अरविन्दाक्षन ने किया है।

विश्वविद्यालय के संवाद भवन में रविवार को आयोजित समारोह में मौजूद शिक्षक व अतिथि।

साहित्य अकादमी के दस साल जीवन के सर्वोत्तम : प्रो. तिवारी

गोरखपुर | वरिष्ठ संवाददाता

महत्तर सम्मान प्राप्त करने के बाद प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि मैं साहित्य अकादमी का आभारी हूं कि उसने मुझे अपना सर्वोच्च सम्मान देने का निर्णय लिया है। अकादमी पदाधिकारियों के प्रति कृतज्ञ हूं कि वह दिल्ली से चलकर इसके लिए गोरखपुर तक आए। मैं इस सम्मान को प्राप्त करने के बाद खुद को सौभाग्यशाली मानता हूं, मगर संकोच का भी अनुभव कर रहा हूं। मैंने 2008 से 2017 तक का जो दस साल अकादमी में बिताया वह मेरे जीवन के सर्वोत्तम वर्ष रहे।

प्रो. तिवारी ने इस पर संतोष जताया कि उन्होंने अपनी पूरी क्षमता व योग्यता से संस्था की जिम्मेदारियों का पालन किया। कहा कि, संस्था ने मुझे देश भर के लेखकों से मिलने व उन्हें जानने का अवसर दिया। मेरे अनुभव और ज्ञान को समृद्ध किया। मुझे प्रतिष्ठा दी। साहित्य सारी सृष्टि को साथ लेकर चलने वाला अनुशासन है। इसमें केवल मनुष्य नहीं चर- अचर, वृक्ष और अदृश्य सभी शामिल हैं। अनंत काव्यात्मक जगत के प्रति करुणा और प्रेम को हमारे आचार्यों ने साहित्य का आधार भाव कहा है। प्रकृति ने मुझे जितनी क्षमता दी है, उससे मैंने अपने लेखन में इसी भाव को शब्द देने का प्रयास किया है।

समारोह को संबोधित करते प्रो. तिवारी

इससे पूर्व साहित्य अकादमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने प्रो. तिवारी के साथ बिताए गए समय के अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि वह गांधी, बुद्ध और तुलसी से प्रेरित हैं। अकादमी अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने प्रो. तिवारी को साहित्य का पुरोधा बताते हुए कहा कि उनके साथ काम करना मेरे लिए जीवन का सर्वश्रेष्ठ समय था। वह अपने आप में पूरी संस्था हैं।

प्रो. तिवारी ने कारपोरेट घरानों का साहित्य अकादमी में दखल नकारा, संकट से उबारा

गोरखपुर | वरिष्ठ संवाददाता

साहित्य अकादमी की परंपरा के अनुसार महत्तर सम्मान के बाद संवाद का आयोजन हुआ, जिसमें देश भर के ख्यातिलब्ध साहित्यकारों ने प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी के व्यक्तित्व व कृतित्व पर विस्तार से चर्चा की। इस दौरान वक्ताओं ने कहा कि प्रो. तिवारी ने अकादमी में कारपोरेट घरानों का दखल बंद किया। इसे लेकर अकादमी की स्वायत्तता तक खतरे में पड़ी मगर उन्होंने अपनी दूरदर्शिता व सरलता के चलते अकादमी को हर संकट से उबार लिया।

दक्षिण भारत के साहित्यकार अरविंदाक्षन ने कहा कि प्रो. तिवारी के लेखन का सौंदर्य उनका प्रतिकार, संवेदनशीलता व दृढ़ता है। वह अपने लेखन से साहित्य को नया आयाम देते हैं। पाठकों के लिए उनकी रचनाएं समाज भाव का मूल्यांकन करती हैं। उनका जीवन बुद्ध, तुलसी और गांधी से प्रेरित है।

उन्होंने कहा कि वह अपने भीतर झांकने की न केवल बात करते हैं बल्कि अपनी रचनाओं को इसी हिसाब से परिष्कृत करते जाते हैं। वह ऐसे महान व्यक्ति हैं, जिनके पास बैठने से दूसरा व्यक्ति भी अपनी महत्ता का एहसास करने लगता है। कविता हो, नाटक हो या आलोचना में भी उनका कोई सानी नहीं है। व्यक्तित्व व सहजता देखकर उनके भीतर का रचनाकार आंकना मुश्किल है। मैं अपने जीवन पर उनके लेखन का प्रभाव देखता हूं।

हिंदी जगत गर्व करेगा : गोयनका

प्रवासी साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठित कमल किशोर गोयनका ने कहा कि प्रो. तिवारी बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं। उनका साहित्य में योगदान लंबे समय तक याद रखेगा। हिन्दी को उन्होंने जो ऊंचाई दी है, उनके लिए हिन्दी जगत उन पर गर्व करेगा। दस्तावेज के 163 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। इस पत्रिका के जरिए उन्होंने लेखकों को जो जगह दी है, लेखकीय रिश्ते को भी खूब जगह दी। इसी का असर है कि वह सबसे प्रसिद्ध बन गईं। उन्होंने कोई गोल नहीं बनाया, बल्कि सभी को साथ लेकर चले। सबका साथ व सबका विश्वास हासिल किया।

'सूटकेस : न्यूयार्क से घर तक'

इस अनजान देश में
अकेले छोड़ तो मुझे
मेरे सूटकेस ने बेवश निगाहों से
जैसे पराकाष्ठा पक्षी
देखता हो गगन को
उसकी भरी आंखों में तब था
एक अजीब परिजन की कातर
या किसी डूबते दोस्त की पुकार
कि उठा लिया उसे
जिसकी मुलायम प्लास्टिक टूट गई थी
हवाई जहाज के माल-असबाब कहीं बीच
कबाड़ से नीचे लादा
जब बार दिया उसे होटल के लॉक रूम में
इस बूढ़ी गौरैया के साथ
कि कोई टूटा पहीं
या अप्रेलिन अनिम वजार
मगर वाली सफल हवाई अड्डे
फिर उठा लिया उसे
दो डॉलर चुका कर
जैसे कसा दो के अपने पुराने सहपाठी को
जिसकी कीमत अब दो कौड़ी भी नहीं रह गई थी
फिर होटल छोड़ दूं
हवाई अड्डे पर उसे छोड़ देने की
मगर उसकी अकड़ाई अकुल आंखें
उस दिन जैसी लगीं
जो अबे घर की उम्र में
अकेली पड़ी हो गांव में
मुझे लगा
अभी खड़ी के अफसर करीने
देर तीसे हवा सैनिक और जासूस
देखा देखा छोड़ देंगे इसका
जो एक कालखंड का अपनी जवानी में
उतरा अब दिल्ली हवाई अड्डे
उसकी पीठ और पेट
लिपटा था वे एक में
कद्दू कुम्हार की तरह
जो बुद्ध से बाद या कार्नेगिया से
इस पर कानी बहन पानी की
कैसिया और संसद में
दिल्ली में उससे कुछ लेना चाहता था दिन
जो बार बार विदेश यात्राओं में सहयात्री रहा
मगर आखिर वह आ ही गया मेरे साथ गोरखपुर
इस घाव की तरह
जो गाढ़क के हाथ से छपा छटककर
लौट आई हो अपने पुराने खूंटे पर
और अब वह मेरे पुराने सामानों के बीच
सिमटी सा मुस्करा रहा
चुनौती देता और पूछता मुझसे
'क्या आगे बढ़ने के लिए जरूरी है
उन्हें पीछे छोड़ देना
जिनके पास भाषा नहीं है?'

सातसर्गित कविता से बात पूरी की

प्रो. तिवारी ने अपनी एक कविता से बात समाप्त की। 'सूटकेस : न्यूयार्क से घर तक' शीर्षक की इस कविता की हर लाइन पर हाल में बैठे सभी लोगों ने खूब तालियां बजाईं।

हिंदी कविता को समृद्धि प्रदान की प्रो. तिवारी ने : अरुण कमल

पटना से आए साहित्यकार अरुण कमल ने कहा कि उनकी हर रचना पढ़ने के बाद मैंने पाया कि केन्द्र में रखकर लिखी गई वैसी कोई दूसरी रचना नहीं दिखी। विश्वनाथ जी विलक्षण कवि हैं। वह व्यक्ति के आलोचक हैं। तिवारी जी अध्येता हैं। प्रो. तिवारी ने एक गोरखपुर से निकलकर पूरे हिन्दी संसार को जो दिया वह दुर्लभ है। दस्तावेज में उन्होंने पहला दलित साहित्य का संस्करण छापा। इसी तरह उन्होंने आठवें दशक की हिन्दी कविता को समृद्धि प्रदान की। मुझे याद है कि जिस तरह से अकादमी का अध्यक्ष बनने के बाद उन्होंने साहसिक निर्णय लेकर अकादमी से कारपोरेट घरानों का दखल बाहर किया था।

उनके साहित्य को शिखर छूना ही था : रेवती रमण

बिहार से आए साहित्यकार रेवती रमण ने कहा कि प्रो. तिवारी ने बचपन में ही विषमताओं को दिल में बसा लिया जो साहित्य के जरिए निखर कर शिखर को छूना ही था। वह खुद लिखते हैं कि उनका गांव कुशीनगर के रायपुर भैंसही उर्फ भेडिहारी, गोरखपुर के उत्तर में है। उनके रचना की गहराई में जो देखें, उसमें भी छाप दिखती है। उन्होंने अपने लेखन में राजनीति पर भी प्रयोग किया। वे हमेशा आम जनता को महत्व देते रहे।

चेतना का विस्तार करती हैं प्रो. तिवारी की रचनाएं : प्रो. मिश्र

संवाद की अध्यक्षता कर रहे अकादमी में हिन्दी परामर्श बोर्ड के संयोजक प्रो. चित्तरंजन मिश्र ने कहा कि हम लोगों ने उन्हें देखा व सुनकर तथा उनसे पढ़कर कुछ सीखने की इच्छा पाली है। हम लोग उनकी रचनाओं का मूल्यांकन करने में खुद को अक्षम पाते हैं। प्रो. तिवारी की कविताएं चेतना का विस्तार करती हैं। उनकी कविताएं विद्यार्थी, शोधार्थी व शिक्षक तीनों के लिए बेहद उपयोगी हैं। 'जिस तरह मैं बोलता हूं उस तरह तू लिख, उसके बाद तू हमसे भी बड़ा दिख।'